CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly Nov. 2017-Apr. 2018 | **UGC Approved** | **ISSN : 2319 - 8648**
Issue X, Vol. II ,April. 2018 | **Sr. No. 64310** | **Impact Factor : 7.139**

पर्यावरणपोषक अग्निहोत्र

प्रा. भारती एस. आर

एम. ए. नेट (संस्कृत), योग,आयुर्वेद एवं निसर्गोपचार विशेषज्ञ, जवाहर महाविदयालय अणदुर, ता. तुळजापूर जि. उस्मानाबाद

--------(12)----------

ऋषियों के वो जमाने इकबार फिर से आ जा
पावों पडूं मैं तेरे अपनी झलक दिखा जा !!
हर घर में यज्ञ होवे सुख शान्ति देने वाला !!
पर्यावरण का पोषक सुस्वास्थ्य देने वाला !!
अग्निहोत्र वेदों का प्राण है । वेद केवल
भारत के ही नहीं अपितु विश्व के सर्व प्रथम
ग्रन्थ हैं. इस सत्य को पाश्चात्य

विद्वानों ने भी स्वीकार किया है:

Rigveda is the oldest book in the world Library

आजकल स्वाइन फ्लू डेंग्यू, चिकनगुनिया जैसी विविध व्याधियों से मानव त्रस्त है ! हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों ने इस प्रकार की व्याधियों के निवारण अर्थ अग्निहोत्र को सर्वोत्तम उपाय बतलाते हुए कहा है :- 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म ' (शतपथ ब्राम्हण) अग्निहोत्र सर्वश्रेष्ठ कर्म है !

अग्निहोत्र के लिऐ औषधीय गुण युक्त वशिष्ठ वृक्षों की सुखी लकडियों का चयन किया जाता है. जैसे :- चन्दन, वृक्ष आम, गुलर, पीपल तथा अन्य क्षीरी वृक्ष की समिधा कहा जाता है ! विविध वनस्पतियों जड़ी बूटियों के सूखे, पुष्पों फलो, पतों, को सामग्री के रूप में प्रयुक्त किया जाता है. जैसे :- पलाश पुष्प, बिल्वपत्र बिल्व फल, धन्वन्तरि, गेंदा पुष्प, तुलसी, माका, गिलोय, अश्वगंधा, गुलाबपुष्प, मालती पुष्प पत्र, सूखे मेवे आदि. उसी के साथ शुध्द गोधृत भी डाला जाता है !

हमारे ऋषि मुनियों को पर्यावरण रक्षा का ज्ञान हजारों वर्षों से था ! यह हमारा दुर्दैव है कि हमने उस पावन अग्निहोत्र परम्परा का ढोंग, पाखण्ड, अंधश्रद्धा कर्मकाण्ड कह कर तिरस्कृत किया ! अग्निहोत्र न ढोंग है . न पाखण्ड, नाही कर्मकाण्ड यह एक परमपावन पर्यावरणपोषक कर्म है ! उस पवित्र अग्निहोत्र की ओर फिर से लेना होगा! इस कार्य के लिए वृक्षसम्पदा का संवर्धन करना होगा ! संस्कृत में कहा है :'वृक्षो रक्षति रक्षितः ' वृक्षों की रक्षा में ही हमारी रक्षा सन्निहित है ! वृक्ष वल्ली, वनस्पती पर्यावरण को शुध्द करती हैं ! हमें इन से मिलता है. जो जीने के लिए अति आवश्यक प्राणवायु

अग्निहोत्र के दो पक्ष हैं :- १. भौतिक पक्ष २. अध्यात्मिक पक्ष ! यहाँ हम विषयानुरूप भौतिक पक्ष पर प्रकाश डालेंगे ! १- भौतिक पक्ष अग्निहोत्र करते समय विविध रोग नाशक पदार्थों की आहूती दी जाती है! पदार्थविज्ञान के अनुसार कोई भी पदार्थ नष्ट नहीं होता है ! उसका रूपान्तरण हो जाता है ! किसी भी पदार्थ पर जब प्रक्रिया की जाती है तो वह रूपान्तरित हो जाता है ! जैसे जलाशय को जल सूर्य की गरमी से वाष्प बनकर पृथिवी पर बरसता है ! उसी प्रकार अग्नि में डाली हुई आहुति रूपान्तरित होकर सूक्ष्म बन जाती है ! स्थूलरूप सूक्ष्म रूप से अधिक शक्ति शाली होता है. एक सूखी मिर्च यदि आग में डाल दी जाये तो उसकी शक्ति कितनी बढ जाती है यह हम सबको विदित है ! ठीक उसी प्रकार रोग नाशक सुगन्धित पदार्थ आहुतिके रूप में अग्नि में डालने से सूक्ष्म होकर उसकी शक्ति बढ जाती है! पदार्थ जितने सूक्ष्म होते हैं. उतनी उनकी शक्ति अधिक होती है.!

अग्निहोत्र करते समय घी, सामग्री, समिधा आदि अग्नि में डालने से दुर्गन्ध का नाश वायु साथ सुगन्ध फैलाकर पर्यावरण के शोधक बनते हैं ! ५० ग्रॅम घी यदि एक व्यक्ति खाता है तो केवल उस अकेले व्यक्ति को

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

उसका लाभ मिलता है ! उतना ही घी यदि अग्नि में डाला जाये तो उससे अनेक लोगों को लाभ मिलता है ! अग्निहोत्र से पर्यावरण शुध्द होता है, इसीलिए प्राचीनकाल में राजा- महाराजा लोग बड़े- बड़े राजसूर्य, अश्वमेध. राष्ट्रमेथ, गृहमेध, वृष्टिमेध, सर्वमेध आदि विविध प्रकार के यज्ञ किया करते थे ! पर्यावरण दूषित होने के कारण हम सभी का स्वास्थ भयंकर बीमारियों से ग्रस्त हो रहा है ! वृक्षकर्तन, यानों, कारखानों का दूषित धुआ विविध परमाणुओं का परीक्षण, रासायनिक खादों का प्रयोग, मनुष्यों का मलमूत्र आदि से पर्यावरण दूषित हो रहा है !

पर्यावरण को शुध्द करने के लिए उपनिषद में भी अग्निहोत्र को सर्वोत्तम उपाय कहा है: अग्निहोत्रं जुहूयात्स्वर्गकामः

सुख,शान्ति,स्वास्थ्य,आनन्द चाहने वाले अग्निहोत्र अवश्य करें !

राष्ट्रीय वानस्पतिक अनुसन्धान संस्था (NBRI) के वैज्ञानिकों ने यज्ञ - हवन - अग्निहोत्र इस विषय में अनुसन्धान करके यह निष्कर्ष निकाला है :

In the bid to study the actual impact of havans an indoor study was carried out the NBRI team including prof Nautugal, mr- Puneet Singh chauhan a fellow of Asian agri history Foundation Yashwant Laxman Nene Their opinion is as follows:

"After the experiment, it was observed that though there was no reduction in the number of bacteria by burning of wood alone, smoke emanating from herbs led to over 94 percent reduction in aerial bacteria " Absence of pathogenic bacteria in the open room even after the 30 days was indication of the bacterial potential of the medicinal smoke was indication of the bacterial potential of the medicinal smoke was indication of the bacterial potential of the medicinal smoke treatment.

"अग्निहोत्र से हम प्रदूषण में भी अपनी रक्षा कर सकते हैं ! उसका एक उदाहरण :- ३ दिसेंबर १६८४ में भोपाल में 'युनियन कार्बाईड' कारखाने से मेथिलआयसोसायनेट –

यह विषाक्त वायु सर्वत्र फैल गया ! उस दुर्घटना में हजारों लोग मृत्यु के मुख में चल गये, अनेक विकलांग हो गये !

'इन्डियन कौन्सिल ऑफ मेडिकल रिसर्च नामक संस्था ने जब उस पर अनुसन्धान किया तब पता चला कि उस वायु से फेफड़े, केंद्र,सोना,त्वचा आदि पर दुष्प्रभाव पडा है ! उसी समय दैनिक अग्निहोत्र करने वाले सुंदरलाल कुशवाहा एवं एम.एल.राठौड ये दो परिवार घर के दरवाजे और खिड़कियाँ बंद करके अग्निहोत्र करने लगे उस अग्निहोत्र के कारण ही उनके परिवार के किसी भी सदस्य को हानि नही हुईउनको जीवन दान मिला ! योगेश्वर श्रीकृष्ण जी ने भी श्रीमद्भगवद्गीता में कहा है :

यज्ञात् भवति पर्जन्यः पर्जन्यादन्न सम्भव !
अन्नाद् भवन्ति भूतानि तस्मात् यज्ञकर्म समुद्भव ! (भगवत गीता)
धूमःज्योतिसलिलमस्तां सन्निपातः मेघः' (कविकुलगुरू कालिदास रचित मेघदूतम्)

अग्निहोत्र के धूम्र से मेघ बनते हैं, उनसे मधु जल की वृष्टि होती है, वृष्टि से फसल अच्छी निकलती है और उस अनाज के आधार पर ही हम जीते हैं ! इसीलिऐ अग्निहोत्र अवश्य करना चाहिए ! अग्निहोत्र से वृक्ष-वल्ली , औषधी,वनस्पती,परिपुष्ट होती हैं ! ऐसे प्राणरक्षक पर्यावरण पोषक वृक्षों को ऋषियों ने मन्त्रों के माध्यम से नमन किया है :- **ओं नमो वृक्षेभ्यो यथेयं पृथिवी**

देवभूतान् गर्भे दधास्ति वै ! तथेमं वृक्षक दध्यात्वा. (ऋग्वेद)
क्षितिजा भवन्तु शं नो !!

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad

४४

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly Nov. 2017-Apr. 2018 | **UGC Approved** | **ISSN : 2319 - 8648**
Issue X, Vol. II ,April. 2018 | **Sr. No. 64310** | **Impact Factor : 7.139**

We pray to all the Trees. All the living beings are produced from the Earth. Trees are also a part of living being.

O God please protect all the trees, let all the trees be beneficial to us.

अग्निहोत्र का अध्यात्मिक पक्ष :

The main purpose of havan is for the purification of our surroundings, It is person's duty to thank nature for balancing our surroundings and making them fit human existence.

Meditation and prayers are port at havan or good karma. Respect and humbleness is also considered part of good karma, which purifies your heart. Concentration of the mind gives power for self realization

अग्निहोत्र का प्रमुख प्रयोजन है पर्यावरण को शुद्ध करना और मानव जीवन के अस्तित्व को बनाये रखना इसके लिए प्रकृति के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना और धन्यवाद देना हमारा कर्तव्य है ! अग्निहोत्र एक पवित्र कर्म है ! प्रार्थना ध्यान, श्रेष्ठ कर्म ये सभी यज्ञ के ही अंग है ! यह अत्यन्त दुःख की बात है कि जिस अग्निहोत्र का उदय भारत देश में हुआ वे भारतीय कहलाने वाले ही उस परमपावन कर्म को ढोंग,पाखण्ड,अंधश्रध्दा,कर्मकाण्ड कह कर कलंकित कर रहे हैं ! अग्निहोत्र एक शास्त्रशुध्द पर्यावरणपोषक पवित्र कर्म है इस सत्य को कोई भी असत्य सिध्द नहीं कर सकता!

वह कौन है जगत में जो सुख नहीं चाहता ?
वह कौन है धरा पर जो शान्ति नहीं चाहता?
वह कौन है संसार में जो आरोग्य नहीं चाहता?
वह कौन है विश्व में जो आनन्द नहीं चाहता?
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः !!

यह प्रार्थना सभी करते हैं उसे सार्थक बनाने होगा! आज नही तो कल अग्निहोत्र अवश्य करना होगा |

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् (यजुर्वेद)

महाराष्ट्र के वसंत परांजपे नामक व्यक्ति ने अग्निहोत्र करके कृषि का उत्पादन चौगुना किया है ! यह प्रयोग उन्होंने अमेरिका में वॉशिग्टन से लगभग ४० कि.मी. अन्तर पर किया जहाँ उन्होंने अग्निहोत्र हाउस की स्थापना की है!

सहायक ग्रंथ सूची :-

१. यजुर्वेद
२. अथर्ववेद
३. शतपथ ब्राह्मण
४. आदर्श दिनचर्या
५. आर्यजगत् स्मरणिका
६. नित्यकर्म विधी
७. सत्यार्थ प्रकाश

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad